UGC Approved Research Journal No. 47845 ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

श्री सर्वोदय एजूकेशन ट्रस्ट संचालित

Sahitya Veethika

An International Peer Reviewed Referred
Quarterly Research Journal of Literature

(त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

• विशेषांक •

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

वर्ष : 12 अंक : 20 जनवरी - मार्च : 2022

अतिथि संपादक

डॉ. दत्तात्रय येडले, डॉ. सुरेश मुंडे

संपादक

डॉ. दिलीप मेहरा

115.BRG-Mar-2022

साहित्य वीथिका

Sahitya Veethika

संरक्षक

डॉ. मालती दुबे, डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़'

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल (उपसंपादक)
डॉ. दीपेन्द्र जडेजा, डॉ. प्रेमचन्द कोराली
डॉ. हसमुख परमार

परामर्शक

तेजेन्द्र शर्मा (लंदन), सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे) डॉ. बापूराव देसाई (महाराष्ट्र),
डॉ. पारुकान्त देसाई (गुजरात), डॉ. मदनमोहन शर्मा (गुजरात)

प्रकाशक

उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
A-685 आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.)
Email: utkarshpublishersknp@gmail.com Mob: 8707662869, 9554837752

कला सज्जा

रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

व्यवस्थापकीय पता

शोभा मेहरा
यश भवन, प्लॉट नम्बर 1423/1, शालिनी अपार्टमेंट के पीछे, नाना बाजार
वल्लभ विद्यानगर, जि. आणंद-388120
ई-मेल: sahityaveethika@gmail.com, सचलभाष 9426363370

पत्रिका में प्रकाशित कविता, लेखादि में अभिव्यक्त विचारों से प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवादों के लिए न्यायालय का क्षेत्र आणंद्र, गुजरात होगा।

An International Peer Reviewed Referred Quarterly Research Journal of Literature

सदस्यता शुल्क

पंचवर्षीय 1500 रुपये
वार्षिक 200 रुपये
संस्था के लिए वार्षिक 300 रुपये
आजीवन 3000 रुपये

अनुक्रम

1	**राष्ट्र चेतना के स्वर** डॉ. जोगेंद्रसिंह बिसेन	1
2	**भारत की स्वाधीनता और हिंदी कवि** (आजादी की अग्निशिखाएँ के विशेष संदर्भ में) डॉ. दिलीप मेहरा	4
3	**स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य** डॉ दत्तात्रय लक्ष्मणराव येडले	9
4	**माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय भावना** प्रोफेसर बेवले ए जे	12
5	**हिंदी फिल्मों में व्यक्त राष्ट्रीय भावना** डॉ. रिना रमेश सुरडकर	15
6	**सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय भावना** डॉ. रेविता बलभीम कावळे	18
7	**माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना** अर्शिया सैय्येद अफसर अली	21
8	**हिंदी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना** शिल्पी सुमन प्रकाश	24
9	**हिन्दी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना (विशेष संदर्भ, भारतेन्दु हरिश्चंद्र)** प्रा.डॉ. बी आर. गायकवाड़	27
10	**प्रेमचंद के कथा साहित्य में राष्ट्रीय भावना** डॉ. सिन्धु सुमन	30
11	**रामधारी सिंह दिनकर की कविता में राष्ट्रीयता की अनुगूँज** रत्नेश कुमार	34
12	**हिंदी उपन्यासों में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना** जगताप अर्चना तुळशीराम	37
13	**हिंदी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना** प्रा.श्री.सोनार ज्ञानेश्वर भगवंत	40
14	**हिंदी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना** मोल्लम डोलमा	43
15	**हिंदी फिल्मों में राष्ट्रीय भावना : विशेष सन्दर्भ पं. भरत व्यास जी के गीतों की में** डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्थ'	46
16	हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना के आयाम डॉ. प्रिया ए.	49
17	**स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका** डॉ.रोहिदास धोंडीबा गवारे	52
18	**हिन्दी साहित्य पर राष्ट्रीय भावना का प्रभाव** डॉ.ज्ञानेश्वर गणपतराव रानभरे	55
19	हिंदी कवियों के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना प्रा. सौ. रोहिणी गुरुलिंग खंदारे	58
20	बाल मुकुंदगुप्तकृत 'शिवशंभु के चिट्ठे' निबंध में राष्ट्रीय चेतना वीरेंद्र	61
21	**रामधारी सिंह 'दिनकर' के गद्य में राष्ट्रीय स्वर** डॉ. सुरेश मुंढे	63
22	**सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता में राष्ट्रीय चेतना** डॉ चांदणी लक्ष्मण पंचांगे	66
23	**मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना** संतोष वसंत कांबले, पूनम शर्मा	69
24	निराला के काव्य में देशप्रेम की भावना पूनम शर्मा, संतोष वसंत कांबले	72
25	आधुनिक हिंदी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना सतीश मधुकर साळवे	75

9 ✓

हिन्दी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना (विशेष संदर्भ, भारतेन्दु हरिश्चंद्र)

प्रा.डॉ. बी आर. गायकवाड़

हिन्दी कविता की परंपरा हजार बारह सौ वर्ष की है। प्राचीन हिन्दी अथवा प्राकृत की बौद्ध धर्म से प्रभावित सिद्धों की और जैन धर्म के आचार्यो दोहे में लिखी कविता से हिन्दी कविता का सूत्रपात हो जाता है। सिद्धों ने अपनी तंत्र साधना में निर्वाण के महासुख को काव्यप्रतिकों से व्यक्त किया नाथ पंथियों ने इन्ही प्रतीको को आपना कर उसे रहस्यात्मथ बना दिया गोरक्षनाथ की परंपरा में मराठी के महाकवी ज्ञानेश्वर हुए।

तंत्रसाधना और हठयोग में बंधी हिन्दी कविता को जीवन के यथार्थ के धरातल पर लाने का काम चारणोने कीया। विरगाथा को अथवा रासो काव्यें में वीर और श्रृंगार रस का ओजस्वी चित्रण हुआ चंद वरदायी, नरपति नाल्ह आदि की रचनाएँ विख्यात है। अब्दुल रहमान हेमचंद्र, विद्यापती इसी आरंभ युग के महाकवि थे। अमिर खुसरो को खडी बोली में कविता करणे का श्रेय दिया जाता है। वस्तुतः खुसरो राष्ट्रीय एकात्मता के अग्रदूत थे फिर भक्तियुग आ गया। निर्गुनोपसक ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि नामदेव, कबीर, रैदास, दादूदयाल आदि थे। प्रेमाश्रयी शाखा के सूफी कवियों ने कथा काव्य के माध्यम से आध्यात्मिक रूपको का चित्रण किया। इनमें जायसी का 'पद्मावत' महाकाव्य विख्यात है। सगुण भक्त कवियोने राम और कृष्ण को परम इष्ट मानकर भक्ति का प्रवाह बनाया। इनमें तुलसीदास और सूरदास कास्थान तो अद्वितीय ही है।

संतो और भक्तों ने जो सामाजिक प्रबोधन किया और भक्ति आंदोलन चलाया इसके सूत्र आधुनिक कविता से जुड़ जाते हैं, किंतु भक्ति साहित्य के बाद जो रीतिकाल आया उसमें श्रंगार को ही प्रधानता मिल गयी और काव्य शब्द चमत्कृती बनकर रह गया। कवित्वपर आचार्यत्व हावी हो गया। केशवदास देव आदी के अलावा भूषण और घनानंद जैसे कवियों ने महत्वपूर्ण रचना की।

आधुनिक हिन्दी कविता की प्रष्टुभूमी में इसप्रकर मध्ययुगीन भक्त संत और काव्यशास्त्र के रीतीप्रविण आचार्य कवियोंकी समृद्ध परंपरा रही है। सन 1857 के स्वतंत्र संग्राम के बाद परिस्थीतियों में क्रांतिकारी बदलाव आगया और आधुनिक युग का आरंभ हो गया।

'राष्ट्रीय एकात्मता' का तात्पर्य किसी राष्ट्र में रहनेवाले नागरिकों की उस भावना से है की जिस भावना के कारण ये आपणे राष्ट्र में हर हाल में जुड़े रहना चाहते है। राष्ट्र सेजुड़े रहने की यह भावना ही राष्ट्रीयता है। जिस राष्ट्र के नागरिको में राष्ट्रीयता जितनी अधिक प्रखर होगी वह राष्ट्र उतनाही अधिक मजबूत होगा राष्ट्रीयता के कारण ही लोग आपणे राष्ट्र के हित में जिते है वक्त आने पर छोटा मोठा त्याग करते है जान की बाजी लगाते है और यहाँ तक की मर मिटने के लिए भी तयार रहते हैं, इसलिये की अपने राष्ट्र की सुरक्षा में ही वे आपनी सुरक्षा का अनुभव करते हैं और इसलिये भी की वे अपने राष्ट्र को "एक परिवार सा"तथा अपने आप को उस परिवार एक सदस्य पाते हैं वे इज इस बात को जानते व मानते है की राष्ट्र व्यापक अर्थ में एक बड़ा परिवार होता है। परिवार चाहे जो हो मात्र तब तक ही वह एकजान बनकर रह सकता है जब तक कीउस परिवार के हरेक सदस्य में परिवार से जुड़े रहने की भावना कायम होती है। जब तक परिवार का हर एक सदस्य यह मान कर चलता है की यह परिवार मेरा है तब तक ही उस परिवार को टूटने का खतरा नहीं रहता टूटने के क्षणों में मजबूती पकड़ता है।

अब सवाल है परिवार से जुड़े रहने की यह भावना की जिससे परिवार के सभी सदस्यों में 'एकात्मभाव' बना रहता है। कहाँ से है आता एकत्मभावइसका उत्तर है संस्कार यांनी कि परिवारिक संस्कार किसी परिवार की वैचारिकता मानसिकता का निर्माण कौन करता है कहां से आते है ये संस्कार कौन है इसका संस्कार कर्ता और किसी न किसी रूप में ये संस्कार उस देश के साहित्य की देन होते है साहित्य ही एकता और सदभाव के वाचक होता है। भाषा के माध्यम से साहित्य सौंदर्य की सृष्टी करता ही है

कहा था । तूम आप ही कमर कसो, आलस छोडो तुम्हारा रुपया तुम्हारे ही देश मे रहे, वह करो देखो जैसे हजार धारा होकर गंगा समुद्र मे मिली है, वैसे ही तुम्हारी लक्ष्मी हजार तरह के इंग्लेंड, फ्रान्स, जर्मनी, अमेरिका को जाती है भाईयों अबतो निंदसे जागो अपने देष की सब प्रकार की उन्नती करो जिसमे तुम्हारी भलाई हो, वैसी ही किताब पढो वैसा ही खेल खेलो, वैसी ही बातचीत करो परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा पर भरोसा मत करो उस जमाने मे दुसरे हिन्दी बुध्दिजीवी मे इतना कहने का साहस न था। आज इतने सालों के बाद भी इस कथन की प्रासंगिकता बनी हुयी यह इस बात दयोतक है की भारतेन्दु ने काव्य मे राष्ट्रीय भावना कितनी स्पष्टरुप मे दिखाई देती है।

भारतेन्दु के रचनात्मक जीवन कल मे सन 1871-80 का काल घोर वैचारिक संक्रमण का काल है । फिर भी इन दस वर्षो के दौरान एक बात पर यह शुरु से दृढ थे की भारत के सभी दुख कष्टो का कारण अंग्रेजी राज है। इस काल की अपनी अनेको कविताओं, नाटको तथा टिप्पणीयों मे उन्होने इसके बारे मे खुलकर कहा। अंग्रेजी राज के प्रती उनकी घृणा भी होती गयी। पर तीखी अंग्रेजी राज का अपना एक आकर्षण भी था। एक बिंदु यह भी था की अंग्रेजी राजा महाराजाओं को सामंतो को नियंत्रीत कीया था। दूसरा बिंदु यह था की उन्होने नदी, नालो पर पूल बनवाये सड़के बनायी पालिकाएं स्थापित की यही सब देखकर उनके मुंह से निकला "अंग्रेज राज सुख सजे सब भारी" (भारत दुर्दशा) पर दुसरी ही पंक्ति में उन्होंने शोषण को लेकर कहा पैधन विदेंश चली जात इहे है अति ख्वारी " इससे यह स्पष्ट होता है की भारतेन्दु के काव्य की मूलसंवेदना ही राष्ट्रीयता की भावना है।

"भारत दुर्दशा" (1876) की रचना उन्होंने दुष्ट लिटन के काल में की थी और इसमे दिखलाया था कि भारत कि दुर्दशाएँ क्या है। वर्ण वैषस्य, दरिद्रता, भुख महामारी, महंगाई, आलस्य धार्मिक उन्माद कायरता भारत दुर्दशा इन्ही का प्रतिक थी इस रचना में भारतेन्दुजी की राष्ट्रीय भावना खुलकर सामने आती है। भारतेन्दु के काव्य में राष्ट्रीय भावना का बिजारोपण हुआ था। साथ ही 'विजय वल्लरी' अफगान युद्ध समाप्त होने पर और विजय वैजयंती मिश्र विजय के होने बाद लिखी गई लेकीन दोनो कविता–ओंका मूल लक्ष्य राजभक्ति प्रदर्शन नहीं था बल्की राजभक्ती को औजार बनाकर अंग्रेजों के शोषण अत्याचार को उदघटित कर करना तथा विरतापूर्ण भारतीय संघर्ष की एतिहासिक परंपरा को उजागर और करते हुए राष्ट्रीय भावना को जगाया है।

भारतेन्दु ने "कविवचन सुधा" (15 अगस्त 1874) मे शुब्द होकर लिखा-

"कोई नही सुनता शुब्ध अंधेर नगरी है"
व्यर्थ न्याय और आझादी देने का दावा है।
सब स्वार्थ साधते हैं।"

अपने प्रहसन 'अंधेर नगरी' में उन्होने सामंती व्यवस्था की विसंगतीयों को उभारा तथा अपने जमाने के तथाकथित न्याय और आजादी की इतनी इतनी खिल्ली उडाई कि वह प्रहसन आज भी हमे मनोरंजन देने के साथ य आत्मसंचेत करता है। भारतेन्दुजी की इन सभी रचनाओंको परखने के के साथ आत्मसचेन बाद उनके साहित्य में राष्ट्रीय भावना दिखाई देती हैं। इसको हम अनदेखा नही कर सकते।

आज भी यह विषय प्रासंगिक है क्योंकी इस वक्त जीवन के हर एक क्षेत्र में मूल्यहिनता क्षेत्र का आपार साम्राज्य फैल रहा है । हरेक प्रदेश जाति, धर्म, भाषा, संस्कृती, अर्थ समाज राजनीति से जामि जुडे इमानदार तथा आस्थावान व्यक्ति में चिंता और अनास्था का भाव पैदा हो रहा है, इस स्थिति को बदलकर देश की एकता और अखंडता की दृष्टी से आवश्यक राष्ट्रीय भावना एकात्मता को बढावा मिल सके, इस दृष्टीसे काव्य का सहेतु निर्माण आज की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को चुनौती के रूप में स्वीकार लेगी तथा राष्ट्रीय भावना की दृष्टी से अत्यंत उपयुक्त काव्य का निर्माण करेगी, हिन्दी भाषा इस दृष्टी से बडी ही उपयुक्त भाषा है।

संदर्भ ग्रंथ -

1. आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना - डॉ. शुभ लक्ष्मी
2. आधुनिक कविता : स्वरूप और विवेचन - डॉ. चंद्रकांत पाटील
3. भारतीय भाषा तिलक विशेष पत्रिका - संपादक - डॉ. बलभीममराज गोरे
4. भारतेन्दु और भारतीय नवजागरण संपादक - शंभुनाथ, अशोक जोशी

हिंदी विभाग अध्यक्ष
महाराष्ट्र महाविद्यालय ता. निलंगा. जि. लातूर